PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 4

नागार्जुन के उपन्यासों मैं राजनीतिक स्त्री चेतना

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक हिंदी विभाग
खड़गपुर कॉलेज खड़गपुर
प. बंगाल भारत ।

प्रस्तावना:-

नागार्जुन मार्क्सवादी विचारधारा के थे। उनका लेखन 1930 - 35 से शुरू होता है। उस समय वे स्वतंत्रता के साथ- साथ स्त्री मुक्ति का सपना भी देख रहे थे । वह मानते थे कि अपना हक हासिल करने के लिए स्त्रियों में राजनीतिक चेतना का होना आवश्यक है इसलिए नागार्जुन ने नारी को राजनीतिक क्षेत्र में उतारा है। नागार्जुन के स्त्री पात्रों में प्रारंभ से ही राजनीतिक चेतना मिलती है। स्त्री मुक्ति के सवालों को बिना राजनीति के हल नहीं किया जा सकता ।यही कारण है कि उनके स्त्री पात्र राजनीति को समझने और उसे अपनाने की कोशिश करते हैं। रतिनाथ की चाची गौरी अंगूठा छाप है, लेकिन वह 'किसान सभा' को चंदा देती है। उसे तारा चरण ने समझा दिया है गरीबों के स्वराज और धनी कों के स्वराज में आकाश- पाताल का अंतर है। गौरी सूत कातती और खादी का उपयोग करती है।" 1

स्मरणीय है कि नागार्जुन ने कहीं भी अपने पात्रों को ना राजनीति की ट्रेनिंग दी है और ना ही उन पर राजनीति के सिद्धांत के फार्मूले अपनाएं हैं। उनकी अधिकांश नारियां सामान्य स्तर की अशिक्षित और मजदूर वर्ग से संबंधित हैं। लेकिन उनमें अपने अधिकारों के प्रति सजगता है । 'वरुण के बेटे ' की मधुरी ने तो आधुनिक नारी के लिए ऐसा द्वार खोल कर दिखाया है जो कि अपने व्यक्तिगत जीवन में समाज से टकराती है और मजदूर वर्ग के

हित के लिए शासन से भी बेलोस संघर्ष करती है। " मधुरी सक्रिय रूप से मछुआ संघ में भागीदारी करती है। इतना ही नहीं जब मोहन मांझी किसान प्रतिनिधियों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है तो स्त्रियां बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। चंदा वसूलने से प्रतिनिधियों के खाने पीने की व्यवस्था तक यह स्त्रियां अपने हाथों में ले लेती है ।"2

'बलचनमा ' उपन्यास में भी नागार्जुन के नारी पात्र राजनीतिक संघर्ष में हिस्सा लेते हैं। इस उपन्यास में भी अशिक्षित और निम्न वर्गीय नारियां हैं, जो कि शिक्षित महिलाओं को घर से बाहर निकलने के लिए आंखें खोल रही हैं। नागार्जुन की यह नारी चेतना की लपट अन्याय को खाक में मिलाने के लिए यहाँ प्रस्तुत हुई है। रामपुरा गांव में जमींदार द्वारा मजदूरों की पकी फसल को हड़पने पर किसान संघर्ष करते हैं, वही हमीदा नाम की मजदूरिन पहली मजदूर महिला है, जो दरांती लेकर किसानों की औरतों की एक टोली के साथ अपनी फसल काट कर घर ले जाती है। बलचनमा बहन रेवनी भी चेतना से संपन्न है। वह इज्जत को पैसे से खरीदने वाले जमींदार को मुंहतोड़ जवाब देती है। ' नई पौध ' की बिसेसरी तो स्वतंत्रता का असलियत भी समझाती है ।वह कहती है ..." सब समझती हूं मैं! सोराज होगा दिल्ली और पटना में। यहां जो ग्राम- सरकार कायम हुई है, उसके ग्यारहठो मेंबर हैं ।जनानी एक्के गो है बूलो?"3

यही नहीं इस उपन्यास में अन्य मजदूर महिलाएं भी ' किसान सभा ' के साथ सक्रिय भूमिका निभाती है। वे अपनी मजदूरी में से पेट काटकर किसान सभा को चंदा देकर सदस्य बनती हैं। रतिनाथ की चाची में तो गौरी चाची ने अपने ओढ़ने तक का कंबल 'किसान सभा' को दान में दे दिया था ।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि " नागार्जुन के पुरुष पात्रों की अपेक्षा स्त्री पात्र अपनी मिट्टी और परिवेश के प्रति अपेक्षाकृत और भी सच्चे हैं। क्योंकि 'वरुण के बेटे ' में राहत कार्य में विश्वविद्यालय की पढ़ी-लिखी लड़कियां भी शामिल हैं ,मधुरी की राजनीतिक और सामाजिक समझ सबको प्रभावित भी करती है फिर भी वे या उस जैसे और पात्र अपने वर्ग के प्रतिनिधि स्त्री- पात्र नहीं है। नागार्जुन के स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों और सामंती अत्याचारों के शिकार हैं और चाहे युवावस्था का वैधव्य हो या फिर वेश्यावृत्ति का कुंभीपाक,

अपनी निजी यातना के माध्यम से ही वे इसे समझते हैं कि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही उन्हें इस अमानवीय नरक से बाहर निकाल सकती है। 'रतिनाथ की चाची' में गौरी ने सामाजिक व्यवस्था और रूढ़ियों के हाथों कितना अधिक सहा है कि वह चुहिया और नेवले की जिंदगी को भी औरत होने से अच्छा समझती है।*** चंपा, जो सफर के साथ कुलसुम और सरदारों के साथ सतवंत कौर बनने को अभिशप्त है। इन सारे असंतोष और व्यवस्था को एक व्यापक घुटन और परवशता से जोड़कर देखने की अपील करती है। चाहे सामाजिक दृष्टि से घृणित और हेय समझे जाने वाली ये युवतियां हो ,विधवा होकर भी चुपचाप, मुंह खोलकर गर्भ होने को विवश गौरी हो या फिर इमरतिया या उगनी हो- ये सब की सब सामाजिक व्यवस्था की शिकार स्त्रियां हैं।कहीं वे धर्म के ठेकेदारों द्वारा, जो इस मौजूदा सामाजिक व्यवस्था में अपनी स्थिति की सारी साधारणता के बावजूद स्त्रियों से बहुत बेहतर स्थिति में हैं, उन पर अत्याचार करने और हक जमाने का अधिकार उन्हें पीढ़ियों और परंपराओं से मिलता आया है और कुछ नहीं तो सिर्फ इसलिए कि वे पुरुष हैं।"4

संदर्भ ग्रंथ

1. श्री धरम , स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और नागार्जुन के उपन्यास, पृ. 152
2. वही, पृ. 123
3. वही, पृ. 123
4. मधुरेश , वर्तमान साहित्य, मई: 2011, पृ. 20